7HUTHV

पाठ 20

लक्ष्य-बेध

-श्री रामनाथ 'सुमन'

किसी भी मनुष्य की सफलता और उसके जीवन की सार्थकता उसके लक्ष्य निर्धारण और उस लक्ष्य प्राप्ति के लिए नियमित कठिन परिश्रम पर निर्भर करता है। यह पाठ दो छोटे दृष्टांत के जरिये जीवन के इन्हीं यथार्थ को, समझ के साथ प्रस्तुत करता है। अर्जुन का जवाब ही उसकी लक्ष्य के प्रति तन्मयता को सिद्ध करता है। वैसा ही उदाहरण मराठों का है जो विचलित मनः स्थिति से उबर कर एक निर्णायक युद्ध करते हुए हारती हुई बाजी जीत लेते हैं। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि हम किसी भी कार्य को कैसे करते हैं ? सार्थकता और पहचान उस कार्य को मिलती है जिसे प्रतिबद्ध होकर एकनिष्ठ भाव से किया जाए।

जिस व्यक्ति ने अपना लक्ष्य निश्चित कर लिया है, उसने अपने जीवन की एक बड़ी कठिनाई दूर कर दी है। वह अनिश्चय, भ्रम, भेद और संदेह के ऊपर उठ जाता है। तब उसके सामने एक प्रश्न होता है, लक्ष्य–बेध कैसे होगा; जीवन के उद्देश्य की सिद्धि कैसे होगी ?

संसार के मनीषियों और कर्मठ पुरुषों ने लक्ष्य–बेध के अनेक उपाय बताए हैं, पर जीवन में सफलता का, लक्ष्य–बेध का, एक मंत्र है जो कभी निरर्थक नहीं हुआ। हमारे कोश में एक छोटा–सा शब्द है–'तन्मयता'। यह छोटा–सा शब्द ही जीवन में लक्ष्य–बेध या कार्य–सिद्धि का मूलमंत्र है।

'तन्मयता' का अर्थ है कि जो लक्ष्य है, उसी से आप भर जाएँ, उसी में लीन हो जाएँ। वह फैलकर आपके संपूर्ण जीवन और कार्य की प्रत्येक दिशा को ढँक ले। सोते–जागते, उठते–बैठते, चलते–फिरते, प्रत्येक क्रिया में, केवल वह लक्ष्य आपको दिखे, चारों ओर वही वह हो। आपका समस्त ध्यान उसी में केंद्रित हो, उससे अलग आपका जीवन असंभव हो जाए।

इस तन्मयता की बात करते हुए इतिहास की दो घटनाएँ याद आ रही हैं। पहली घटना महाभारत काल की है। आचार्य द्रोण राजकुमारों को बाणविद्या सिखा रहे थे। समय पर शिक्षा समाप्त हुई और राजकुमार आचार्य के समीप परीक्षा के लिए एकत्र हुए। आचार्य उन्हें एक वनस्थली में ले गए। एक वृक्ष के ऊपर बैठी चिड़िया की आँखों की पुतली

के लक्ष्य–बेध का निश्चय हुआ। आचार्य ने सबको निशाना ठीक करने को कहा और तब एक छोटा–सा प्रश्न किया, "तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

किसी ने कहा, "वह वृक्ष की पतली टहनी है। उस पर लाल रंग की चिड़िया बैठी है। उसकी आँख दिखाई दे रही है।''

किसी ने कहा, "मुझे चिड़िया दिखाई देती है, उसकी आँख में निशाना लगा रहा हूँ।" मतलब किसी ने कुछ उत्तर दिया, किसी ने कुछ; पर सबको अनेक पदार्थ दिखते रहे और उनके बीच लक्ष्य–बेध की तत्परता भी दिखाई पड़ी। जब अर्जुन की बारी आई और आचार्य ने उससे वही प्रश्न दोहराया तो उसने कहा–

"गुरुदेव, मुझे सिवाय चिड़िया की आँख की पुतली के और कुछ दिखलाई नहीं देता।"

आचार्य ने शिष्य की पीठ ठोकी और आशीर्वाद दिया। अर्जुन परीक्षा में सफल हुए।

दूसरी घटना मराठा इतिहास की है। सिंहगढ़ की विजय का दृढ़ संकल्प करके मराठों ने उस पर आक्रमण किया। सारे मराठा सैनिक एक गोह की सहायता से सिंहगढ़ पर चढ़ गए। घोर युद्ध हुआ। युद्ध में उनका नेता तानाजी मारा गया। उसके मारे जाते ही मराठों की सेना हिम्मत हारकर भागने लगी और जिस रस्से के बल चढ़कर ऊपर किले पर आई थी, उसी के सहारे नीचे उतरने का इरादा करने लगी। तानाजी के छोटे भाई सूर्याजी ने जब यह देखा तो आकर चुपके से रस्से का किले की ओरवाला हिस्सा काट दिया और जब मराठे उधर भागे तो चिल्लाकर कहा–"मराठो, भागते कहाँ हो ? वह रस्सा तो मैंने पहले ही काट दिया।" जब मराठों ने देखा कि निकल भागने का कोई उपाय नहीं है, तब सब कुछ भूलकर ऐसे लड़े कि सिंहगढ़ विजय कर लिया।

दोनों घटनाएँ स्वयं अपनी बात कहती हैं। अर्जुन की उस परीक्षा के बाद हजारों वर्ष बीत गए हैं, पर आज भी जीवन की परीक्षा में कोटि–कोटि मनुष्यों के सामने आचार्य द्रोण का वह प्रश्न उपस्थित है, "तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

इस प्रश्न के उचित उत्तर पर ही जीवन की सिद्धि निर्भर है। मानवजीवन की सफलता–असफलता की यह एक चिरन्तन कथा है। यह उत्तर लक्ष्य–बेध का एक ही उपाय बताता है–'लक्ष्य में तन्मयता'। जहाँ साधक लक्ष्य में तन्मय है, जहाँ उसे और कुछ दिखाई नहीं देता, जहाँ वह सब कुछ भूल गया है, अपने चारों ओर के ध्यान बँटानेवाले पदार्थों को भूल गया है, लक्ष्य है, लक्ष्य है और कुछ नहीं, वहाँ लक्ष्य– बेध निश्चित है।

दूसरी घटना भी यही कहती है कि जब तक रस्सा काटकर पीछे लौटने की संपूर्ण संभावनाओं का अंत आपने नहीं कर दिया, जब तक लक्ष्य से मन को इधर–उधर हटानेवाला एक भी साधन आपने बचा रखा है, तब तक लक्ष्य–बेध नहीं होगा।

इन दोनों में एक ही बात दोहराई गई है कि लक्ष्य में चित्त को केंद्रित करके लक्ष्य–बेध करो।

धनुष से छूटनेवाला बाण वायुमंडल में यहाँ–वहाँ नहीं घूमता। वह अपने चारों ओर के पदार्थों से नहीं उलझता। वह दाएँ–बाएँ, ऊपर–नीचे नहीं देखता। वह जिस क्षण छूटता है, उसी क्षण से अपने लक्ष्य में केंद्रित होता है। उसका लक्ष्य एक है, उसकी दिशा एक है। वह सीधा जाकर अपने लक्ष्य में मिल जाता है।

कुतुबनुमा की सुई की भाँति एक दिशा और एक लक्ष्य में केंद्रित होना उद्देश्य–सिद्धि का उपाय है। इससे हमारे जीवन के मार्ग में, दूसरे सैकड़ों प्रकाश हमें अपने मार्ग से बहका देने के लिए चमकेंगे और प्रयत्न करेंगे कि हमें अपने कर्त्तव्य और सत्य से डिगा दें पर हमें चाहिए कि अपने उद्देश्य की सुई को ध्रुव तारे की ओर से कभी न हटने दें।

मन की संपूर्ण चेतना को, इच्छाशक्ति को, किसी एक कार्य, दिशा या लक्ष्य में केंद्रित कर देना ही तन्मयता है। जब सूर्य की किरणों को किसी आतिशी शीशे के सहारे एक कागज के टुकड़े पर केंद्रित करते हैं तो कागज जल उठता है। जल में प्रच्छन्न विद्युत को कुछ साधनों से केंद्रित करके बड़े–बड़े कारखाने चलाए जाते हैं। शक्ति पहले भी वहीं रहती है, पर बिखरी होने से वह बेकार है। एकाग्र करके उससे संसार को हिलाया जा सकता है। वैज्ञानिकों का कथन है कि एक एकड़ भूमि की घास में इतनी शक्ति बिखरी हुई होती है कि उसके द्वारा संसार की सारी मोटरों और चक्कियों का संचालन किया जा सकता है।

संसार में काम करनेवाले बहुत हैं, काम को बोझ समझकर करनेवाले और भी अधिक हैं, पर लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर, उसमें एकनिष्ठ होकर काम करनेवाले बहुत थोड़े हैं। पर ये थोड़े से मनुष्य ही हैं जो संसार को हिला देते हैं, जो अपनी एकाग्रता से जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। आप अपने लिए जो भी लक्ष्य चुनिए, उसमें अपने मन और शरीर, अपनी संपूर्ण शक्तियों को केंद्रित कर लीजिए। वह और आप एक हो जाइए। दुनिया को भूल जाइए, अपने को भूल जाइए, केवल लक्ष्य के दर्शन कीजिए और तब उसे बेध लीजिए। संसार आपका है, जीवन आपका है, सफलता आपकी है।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक के अनुसार लक्ष्य भेद का मूल मंत्र क्या है और क्यों?
2. किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में तन्मयता की क्या भूमिका है?
3. पाठ में तन्मयता के उदाहरण कौन–कौन से हैं ?
4. प्रसिद्ध धनुर्धर अर्जुन के लक्ष्य भेद से संबंधित में कौन सी कथा है ?
5. सिंहगढ़ के किले को मराठे कैसे जीत पाए ?

6. कुतुबनुमा की सुई हमें क्या सीख देती है ?
7. संसार में काम करनेवाले कैसे–कैसे लोग हैं?
8. लेखक के अनुसार लक्ष्य भेद के लिए क्या आवश्यक है?

पाठ से आगे

1. आप सभी अपने–अपने लक्ष्य की कल्पना कीजिए तथा सोचिए कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति कैसे करेंगे। आपस में चर्चा कर लिखिए।
2. अर्जुन की जगह आप होते तो अपने गुरु के प्रश्नों का आप क्या–क्या उत्तर देते? कल्पना कर अपने उत्तर लिखिए।
3. लक्ष्य से सफलता और असफलता जुड़ी हुई है। परीक्षा में सफल होना आपका लक्ष्य होता है तो इसमें अपनी सफलता के लिए क्या–क्या करना चाहेंगे? आपस में चर्चा कर लिखिए।
4. आचार्य द्रोणाचार्य द्वारा ली गई परीक्षा में अर्जुन के अतिरिक्त सभी राजकुमार क्यों असफल हो गए? साथियों से बातचीत कर इस प्रश्न का उत्तर लिखिए।
5. मराठा सेनापति सूर्याजी द्वारा सिंहगढ़ किले पर जीत के लिए किले की ओर वाली रस्सी का हिस्सा काटा जाना क्या उचित प्रतीत होता है ? शिक्षक और साथियों से बातचीत कर इसका उत्तर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में इस प्रकार के प्रयोग आपको देखने को मिलेंगे, जैसे–**उस** परीक्षा, **इस** प्रश्न, **जिस** क्षण, **उनका** नेता, **जब** मराठे। शब्दों का इस प्रकार का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण है। अर्थात् जब कोई सर्वनाम शब्द का संज्ञा शब्द से पहले आना तथा वह विशेषण शब्द की तरह संज्ञा की विशेषता बताना। पाठ से सार्वनामिक विशेषण के उदाहरणों को खोज कर लिखिए।
2. पाठ में समानोच्चरित शब्द या समोच्चरित शब्द का प्रयोग हुआ है। ये शब्द सुनने और उच्चारण करने में समान प्रतीत होते हैं, किन्तु उनके अर्थ भिन्न–भिन्न होते हैं। जैसे–

   और (तथा), ओर (तरफ)।

   चौक (चौराहा), चौंक (चौंक जाना, आश्चर्य में पड़ना)।

   ऐसे ही समान उच्चारण वाले शब्दों को पाठ से ढूँढ़ कर लिखिए।

   - निम्नलिखित शब्दों के जोड़े दिए गए हैं। इनका अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए जिससे उनके अर्थ स्पष्ट हो सके–

     अवधि–अवधी, गाड़ी–गाढ़ी, उतर–उत्तर, प्रमाण–प्रणाम, दिन–दीन, देव–दैव, धन–धान, पक्का–पका।

3. 'संसार' और 'परिवार' जैसे शब्दों में इक प्रत्यय लगाकर सांसारिक और पारिवारिक शब्द बनते हैं। इसी प्रकार से निम्नलिखित शब्दों में इक प्रत्यय का प्रयोग कर शब्द बनाइए– स्वभाव, तर्क, अलंकार, न्याय, वेद, व्यापार, लोक, विज्ञान, व्यवहार, समर।
4. पाठ में प्रयुक्त हुए निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्दों को लिखिए–
असफलता, एकाग्र, केन्द्रित, एकनिष्ठ, प्रच्छन्न. इच्छा, निश्चित, मतलब, विजय, संचालक।

योग्यता विस्तार

1. दृढ़ इच्छा शक्ति और लगन के सबसे निकट उदाहरण के रूप में एकलव्य उल्लेखनीय पात्र है। एकलव्य के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर कक्षा में सुनाइए।
2. ध्रुवतारा को हम अन्य किन नामों से जानते हैं ? ध्रुवतारे के संबंध में प्रसिद्ध कहानी को अपने बड़े बुजुर्गों से जानकर कक्षा में सुनाइए।
3. लक्ष्य भेद की कई अन्य कहानियाँ आपके परिवेश और समाज में प्रचलित होंगी उन्हें पता कर लिखिए और कक्षा में सुनाइए। इसके अलावा आप अपने साथियों के साथ मिलकर कहानी बनाइए और सुनाइए।

7IMH2T